• अभि + सेक = अभिषेक (... परिवर्तन)

3. **विसर्ग संधि–** विसर्ग के बाद स्वर अथवा व्यंजन आने पर उनके मेल से उत्पन्न विकार अथवा परिवर्तन को विसर्ग संधि कहते हैं। विसर्ग संधि के नियम निम्नवत हैं–

विसर्ग संधि के प्रमुख नियम–

(क) **विसर्ग का 'ओ' में परिवर्तन–**

यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो और विसर्ग के बाद 'अ' हो या किसी भी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण हो अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् हो, तो विसर्ग का 'ओ' में परिवर्तन हो जाता है, जैसे–

- मनः + रथ = मनोरथ (विसर्ग के बाद 'र')
- तपः + बल = तपोबल (विसर्ग के बाद 'ब')
- मनः + रंजन = मनोरंजन (विसर्ग के बाद 'र')
- मनः + अनुकूल = मनोनुकूल (विसर्ग के बाद 'अ')

(ख) **विसर्ग का 'र्' में परिवर्तन–**

यदि विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो और विसर्ग के बाद कोई स्वर हो या किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण हो अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् हो, तो विसर्ग 'र्' में परिवर्तित हो जाता है, जैसे–

- निः + उपाय = निरुपाय (विसर्ग के बाद 'उ' स्वर)
- दुः + जन = दुर्जन (विसर्ग के बाद च वर्ग का तृतीय वर्ण 'ज' आया है)
- निः + विकार = निर्विकार (विसर्ग के बाद 'व' वर्ण)

(ग) **विसर्ग का 'श्', 'ष्' तथा 'स्' में परिवर्तन–**

यदि विसर्ग के बाद च्, छ् हो, तो विसर्ग 'श्' में ट्, ठ् हो अथवा विसर्ग से पूर्व इ या उ हो और उसके बाद क, ख, प, फ आए, तो विसर्ग 'ष्' में तथा त्, थ् हो, तो विसर्ग 'स्' में परिवर्तित हो जाता है, जैसे–

- निः + चय = निश्चय (विसर्ग के पश्चात 'च्')
- निः + छल = निश्छल (विसर्ग के पश्चात 'छ्')
- धनुः + टंकार = धनुष्टंकार (विसर्ग के पश्चात 'ट्')
- निः + कलंक = निष्कलंक (विसर्ग के पूर्व 'इ' तथा उसके पश्चात 'क्')
- निः + फल = निष्फल (विसर्ग के पूर्व 'इ' तथा उसके पश्चात 'फ्')
- निः + तेज = निस्तेज (विसर्ग के पश्चात 'त्')
- अतः + थल = अंतस्थल (विसर्ग के पश्चात 'थ्')

Scanned by CamScanner